ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–९८
दिनांक– मंगलवार, २६ दिसम्बर, २०२३

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 26.7 एवं 11.5 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 96 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 53 प्रतिशत, हवा की औसत गति 1.5 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 1.8 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 8.1 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 14.7 एवं दोपहर में 26.7 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा तथा सुबह में हल्का कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(27–31 दिसम्बर, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 27–31 दिसम्बर, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल रह सकते हैं। इस दौरान मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में अधिकतम तापमान सामान्य से 3–4 डिग्री सेल्सियस अधिक रहने की सम्भावना है। जिसके चलते यह तापमान 27–28 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है। न्यूनतम तापमान भी सामान्य से 2–3 डिग्री सेल्सियस अधिक रहने की सम्भावना है। यह तापमान 13–14 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 2–3 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो 21 से 25 दिनों की हों गयी हो 30 किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें। गेहूँ की बुआई के 30 से 35 दिनों के बाद की अवस्था जिसमें (पहली सिंचाई के बाद) गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर–पतवार उग आते है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन 33 ग्रम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन 20 ग्रम प्रति हेक्टर दवा 500 लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।
- गेहूँ की फसल जो 40 से 45 दिनों की हो गई है तो उसमें दूसरी सिंचाई कर 30 किलो ग्राम नेत्रजन का प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें।
- मक्का की फसल में तना बेधक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुद् को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। जिससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधें को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुचाती है। उपचार हेतु फसल में अंकुरण के दो सप्ताह बाद फोरेट 10 जी0 या कार्बोफ्यूरान 3 जी0 का 7–8 दाना प्रति गाभा दें। अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन 250–300 मि0ली0 प्रति हे0 की दर से छिड़काव करें। नवम्बर माह के शुरु में बोयी गई मक्का की फसल जो 50 से 60 दिनों की अवस्था में है। इन फसलों में 50 किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार कर मिट्टी चढ़ावें।
- खड़ी रबी फसलों जैसे–आलू, गाजर, मटर, टमाटर, धनियाँ, लहसून में कृषक भाई झुलसा रोग की निगरानी करें। बदलीनुमा मौसम तथा वतावरण में नमी होने पर यह बीमारी फसलों में काफी तेजी से फैलती है। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व सिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पूरा पौधा झुलस जाता है। इस रोग के लक्षण दिखने पर 2.5 ग्राम डाई–इथेन एम0 45 फफूँदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर समान रुप से फसल पर 2–3 छिड़काव 10 दिनों के अन्तराल पर करें।
- आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगराणी करें। यह कीट आलू में काफी हानी पहुचाता है। फसल की शुरुआती अवस्था में यह कीट रात्री बेला में जमीन की सतह से पौधे को काट डालता है। फसल के बाद की अवस्था में यह पौधे की शाखाओं एवं पत्तियों को काटता है। कंद बनने की अवस्था में यह कंद को खाता है। इस कीट का प्रकोप फसल में दिखनें पर बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2.5 से 3 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से से घोल बनाकर छिड़काव करें। आलू की फसल से खरपतवार निकालें।
- पिछात मटर में निकाई–गुराई करें। फसल में फली छेदक कीट की निगराणी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनुमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियॉ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। 15–20 टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ई0 सी0 या नोवाल्युरॉन 10 ई0 सी0 का 1 मि0 ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- रबी प्याज की रोपाई प्राथमिकता से करें। पॉक्ति से पॉक्ति की दूरी 15 से0मी0 तथा पौध से पौध की दूरी 10 से0मी0 पर करे। पौध की रोपाई अधिक गहराई में नहीं करें। अगात रोपी गई प्याज में निकौनी करे। लहसुन की फसल में निकौनी एवं कीट–व्याधि की निगरानी करें।
- बैगन की फसल को तना एवं फल छेदक कीट से बचाव हेतु ग्रसित तना एवं फलो को इकठा कर नष्ट कर दें, यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड 48 ई0सी0/1 मि0ली0 प्रति 4 ली0 पानी की दर से छिड़काव करे।

आज का अधिकतम तापमानः 25.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 3.6 डिग्री कम अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 11.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.3 डिग्री अधिक

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)